मथुरा से भदावर में चतुर्वेदियों का आगमन

माथुरों के रहने का मुख्य स्थान मथुरा है। जब तक देश में राज्य देशवासियों का रहा माथुर ब्राह्मण मथुरा छोड़कर अन्य किसी स्थान पर नहीं गए। परन्तु जब मुसलमानों ने चढ़ाई की और जब वे सताए गए तब इनको अपनी जन्मभूमि छोड़नी पड़ी। सन 1017 ई. महमूद ने कन्नौज से लौटते समय मथुरा को बीस दिन लूटा। इस लूट में कुछ माथुर लड़े और कटे मरे और कुछ अपने कुल को नष्ट होता देख बाल बच्चों को साथ में ले चित्तौड़ में जा बसे। इसी से मथुरा वाले अन्य स्थानीय चौबों को चित्तौड़ा कहते हैं और कुछ यादव राजाओं के साथ करौली में जो यादवों की राजधानी नियत थी चले गए और जब सन 1303 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ का कटा किया और सन 1568 ई. में अकबर बादशाह ने चित्तौड़ पर चढ़ाई की तब माथुरों को चित्तौड़ भी छोड़नी पड़ी और समस्त राजपूताने के राजस्थानों में जा बसे। कुछ माथुर चौहान वंशी राजा चंद्रसेन के साथ जिसने अपनी राजधानी चंदवार जो जिला आगरा में फिरोजाबाद से दो कोस की दूरी पर दक्षिण की ओर है आकर बसे और थोड़े समय पीछे भद्रदेश (भदावर) के बीच चंद्रसेन राजा के नाम पर एक ग्राम चंद्रपुर बसाया और उसे आबाद किया। फिर कुछ अपनी नातेदारी के कारण और कुछ वादा रख जागीर और मुआफी आदि जीविका निमित्त मथुरा छोड़कर अन्य-अन्य स्थानों में जा बसे।

यह भी कहा जाता है कि जब महाराज भदावर का संबंध चित्तौड़ से हुआ और जब उन्होंने माथुरों की वीरता और उनके रसद के कार्य का प्रबंध देखा और सुना तो वह बहुत संतुष्ट हुए और उनको बड़े सम्मान से लाकर अपने यहाँ चंद्रपुर में 1200 बीघा उपजाऊ भूमि और 1800 बीघा बेहड़ देकर रखा। चंद्रपुर वाले प्रथम बंजारे कहलाते थे क्योंकि राजा के यहाँ यह लोग रसद देते थे और सड़कों के अभाव में प्राय: बैलों पर सब सामान लादकर ले जाते थे। सब स्थानों में यदि माथुरों का पता लगाया जाय तो यही पाया जायेगा कि या तो वे सीधे मथुरा से आकर बसे हैं या किसी रजवाड़े से आकर या चंद्रपुर से।

आगरा जिला में चौबे लोग निम्नलिखित स्थानों पर बसे हुए पाए जाते हैं। फिरोजाबाद, चंदवार, फतेहबाद, मई, बटेश्वर, बिजकौली, पुरा, तालगाँव, होलीपुरा, बाह, पिनाहट, चंद्रपुर, कमतरी, कछपुरा, नहटौली, हतिकांत, कचौरा, पारना तथा नौगवाँ।

-मुक्ता प्रसाद स्मृति ग्रंथ से साभार

होलीपुरा

भरत चतुर्वेदी 'अचल'

सोलहवीं सदी का द्वितीयार्द्ध। देश में मुगल आक्रमणों का उत्पीड़न। एटा के खिरिया क्षेत्र में ठाकुरों के एक गिरोह से नवाब-फर्रूखाबाद की फौज का जब-तब होता युद्ध। ठाकुरों की सेना नवाबी सेना पर बीस पड़ रही थी। बात चतुर्वेदी वंश परम्परा के तत्कालीन नक्षत्र बुचई सिंहजी तक पहुँची। तहकीकात करने पर पता चला दोष ठाकुरों का है। उन्होंने नवाब से ठाकुरों को स्वयं दंभित करने का प्रस्ताव सशर्त किया। नवाब साहब राजी हुए तो बुचई सिंहजी मल्लयोद्धा चतुर्वेदी वंशजों का नेतृत्व करते घमासान युद्ध में उतर पड़े। ठाकुरों को परास्त कर बुचई सिंह जी ने खिरिया फतह किया। धर्मरक्षा के उद्देश्य से मथुरा क्षेत्र त्याग चुका चतुर्वेदी परिवार खिरिया में बस गया। खिरिया के राजा वीर बुचई सिंह हुए। फर्रूखाबाद नवाब को पूर्व सहमति वश तय सालाना कर से संतोष न था। उसने खिरिया क्षेत्र में ठाकुरों का एक डोला अपने फौजियों से लुटवा बुचई सिंहजी की सत्ता को ललकारा तो खिरिया नरेश

ने कर देना बंद कर दिया। बात बढ़ी तो राड़ तक जा पहुँची।

इस बीच बुचई सिंह जी के ज्येष्ठ पुत्र विजन सिंहजी का ब्याह तालग्राम में हुआ था। विजन सिंह जी के साले बहिन को विदा करने आ गये। युद्ध की चिंता तो थी ही, बुचई सिंह जी ने बहू को भेजने की अनुमति दे दी तो गर्भवती पुत्रवधू खिरिया से मायके तालग्राम चली गयी। इसे कहते हैं विधि का विधान। इस घटना से बुचई सिंह जी को सर्वनाश से बचा लिया। नवाब की फौजी साथी-सरदारों की सहायता से खिरिया पर टूट पड़ी तो बुचई सिंह जी के साथ चतुर्वेदी नरपुंगों ने चार-चार छः-छः हमलावरों को काटने के बाद वीरगति प्राप्त की। इस रणबांकुरे की वीरगति पर महल में बचे अन्य सभी पुरुष केसरिया बाना पहन दिवंगत महावीर की धर्मपत्नी वीरांगना बुचाकर रानी के साथ युद्ध को निकल पड़े और महिलाओं-बच्चों ने जौहर व्रत का वरण किया। बुचई के सिंहशावकों-विजन सिंह और वाहन सिंह ने भी माँ बुचाकर रानी के साथ यह धर्म युद्ध लड़ते हुए माँ कालिके की जीभ-सी लपलपाती तलवारें भांजी। उस दिन विधि का विधान रणभूमि से किसी का भी जीवित नहीं लौटना था। लगभग समूची खिरिया सेना कट गयी, बाकी बचे मथुरा के एक गुरु और एक बरुजी। दोनों ने समूचे कलेजे का जोर बटोर तालग्राम पहुँचकर विजन सिंह प्रिया को यह कठोर संवाद दिया।

खिरिया के वर्तमान खंडहर हमारी कीर्ति पताका फहरानेवाले बुचई सिंह जी के गौरव मंडित दिनों और उनके सपरिवार महान बलिदान के मूक साक्षी हैं। ब्राह्मणों की इस जुझारू एवं विलक्षण वेदपाठी परंपरा के हम वंशज हैं और हमारा कर्तव्य बनता है कि क्षेत्र में जब भी पहुँचे खिरिया में बुचई सिंह जी के महल-खंडहरों की माटी को प्रणाम कर मस्तक पर शोभित करें। शान ऐसी कि आज भी इन ऐतिहासिक कंगूरों-स्तम्भों के पास से कोई धौंस दे नहीं निकल सकता। वीर आत्माओं की चिर निद्रा बाधित न हो अतः गाजे-बाजे का कोई भी आयोजन इन प्रासादी स्मृतियों के पास से दूर तक चुपचाप निकलना आज भी समीचीन समझता है। विजन सिंह की पत्नी ने ननसाल में भोगनचंदजी को जन्मा। उनसे फैलीं तीन बड़ी शाखाएँ- होलीसिंहजी, तिलोक सिंहजी और जीवन सिंहजी। होलीपुरा से चहुंदिशा फैला चतुर्वेदी समाज होनहार वीरवान होलीसिंहजी के प्रति सर्वदा आभारी तथा इनके जीवन चरित्र से सदा प्रेरित होता रहेगा। इस ऋषि पुरुष के दिखाये सामाजिक रचनात्मक एवं धर्मभीरु पथ पर चलकर हमने विभिन्न क्षेत्रों में जो सफलताएँ पाई हैं, उनका श्रेय होलीसिंहजी की प्रेरणा को कम नहीं जाता। अनुममेय वंश परम्परा के प्रति इन्हें दादी की सच्ची कहानियों एवं वृतांतों ने प्रेरित किया। एक बार प्रसंग चला तो दादी माँ ने यह भी बताया कि प्रपितामह का विशाल खजाना खिरिया प्रसाद में तुलसी वृक्षवेदी के नीचे गड़ा रह गया। वीरता के सामने युक्ति कई बार नहीं ठहरती। होलीसिंहजी सोलह छकड़े ले वीर चतुर्वेदी किशोरों के साथ गंभीर खतरे के बावजूद खिरिया में प्रवेश कर गये। दिन भर प्रासाद के नीचे पड़ाव डाला। रात में भग्न प्रासाद में पहुँचकर सही स्थल खोज खजाना ढूँढ़ निकाला। रातों रात खिरिया से सकुशल वापसी। जब तक नवाब के फौजियों को खबर लगती होलीसिंहजी साथियों सहित काफी दूर निकल चुके थे- एक ठाकुरों की बस्ती के पीछे आती मुगल सेना से उनकी जबरदस्त भिड़ंत हुई, जिसे देख ठाकुर मुखिया ने इस वीर किशोर से प्रभावित हो मुगालिया फौज को ललकारा और कहा- क्षेत्र हमारा है, कुशल चाहते हो लौट जाओ। विधि का विधान ऐसा भी होता है। वीर होलीसिंहजी की धर्मयुद्ध के मोर्चे पर यह पहली जीत थी।

सत्रहवीं सदी के आरम्भ में भदावर महाराज को सम्पत्ति की जरूरत आन पड़ी। अपनी सम्पत्ति को सुरक्षित निवेश की कसौटी कस होलीसिंहजी ने महाराज के राजकार्यों हेतु धन देना शुरू किया। चौबेजी की विलक्षणता परख महाराज गोपालसिंहजी होलीसिंहजी का ही कहना मानने लगे।

लोकोक्ति है कि आपने महाराज को दिल्ली पर धावा बोलने की प्रेरणा भी दी थी। उन्हीं के नेतृत्व में हुई लड़ाई में दिल्ली की फौज ने शीघ्र ही शस्त्र डाल दिये। एक मत यह भी है कि होलीसिंहजी ने इस विजय अभियान से वापसी पर स्मृति चिन्ह के रूप में आज भी गौरव से खड़े मथुरा के होली दरवाजे का निर्माण कराया था।

वीर-धीर और उद्यमी होने के साथ-साथ हमारे इन कीर्ति पुरुष को भगवदभक्ति सदा प्राप्त थी। प्रतिदिन पिनाहट से बटेश्वर जाकर श्री यमुना स्नान और शिवपूजन कर लौटते थे। घोड़ा होलीपुरा के वर्तमान स्थान पर छोड़ आगे पैदल जाते थे। फिक्र स्थान बदलने की भी रहती थी क्योंकि महाराज पास आकर बसने का आग्रह करते थे। रुपये की शीघ्र आवश्यकता अथवा तुरन्त सही सलाह की जरूरत पर महाराज को होलीसिंहजी का इतना दूर रहना पसंद न था। बात उस दिन की है जब वे यथाक्रम श्रीयमुना स्नान हेतु बटेश्वर जा रहे थे। घोड़ा बाँधने के नियमित स्थान पर पहुँचकर देखते हैं कि स्वयं पर टूट पड़े एक खूंखार भेड़िये को एक बकरी ने बहादुरी से सामना कर खदेड़ दिया। वीर वसुंधरा का यह जीवन्त प्रमाण पा होलीसिंहजी की तलाश पूर्ण हुई और उन्होंने इसी स्थल पर बसने का फैसला कर लिया। निर्णय सुन महाराज अत्यन्त प्रसन्न हुए एवं स्वयं ग्राम की नींव डालने पहुँचे। भदावर नरेश कल्याणसिंह ने वि. सं. 1616 में स्वयं फावड़ा चला हमारी वामस्थली होलीपुरा के बसाव की शुरुआत की। होलीसिंहजी की कीर्ति पताका का फहरना जो शुरू हुआ सो आज तक रुका नहीं है- इण्टर कॉलेज, अस्पताल एवं बैंक व सरकारी कार्यालयों से युक्त आज भी होलीपुरा सम्पूर्ण उत्तर भारत में एक आदर्श ग्राम का रुतबा रखता है। इस ग्राम में होलीसिंहजी की प्रासादोपम हवेली के शेष बचे अंश आज भी बार-बार इस महापुरुष की गौरव परम्परा से हमारा सीधा नाता जोड़ते हैं।

होलीसिंहजी जैसे महात्मा पुरुष की परम्परा को फैलानेवाले सतानंदजी, पृथ्वीसिंहजी, हलधरसिंहजी, हिम्मतसिंहजी, छत्रसिंहजी, हरप्रसादजी, दूल्हरायजी जैसे अगणित महापुरुषों का अतीत हमारे साथ है। इनके अंश प्रतीक न केवल हमारे प्राण हैं बल्कि इनके ऐतिहासिक जमाने की हवेलियों के अब भी खड़े विशाल द्वार और हथसालों-घुड़सालों के खण्डहर हमारे अतुलनीय ग्राम के वे तीर्थस्थल है जहाँ पहुँच दो घड़ी इन पुण्यात्माओं का स्मरण करें तो लगेगा इतिहास बोल उठा है :

कर प्रणाम पूज्यवर को, क्या तुम भी लौट चले निज धाम।
ग्राम तुम्हारा तुम्हें पुकारे, लम्बित यहाँ पड़े बहु काम।
फैलो अजर- अमर व्रत लो, नरश्रेष्ठ बनो, पर रहो सजग-
भूलो जो चाहे और ठौर, मत बिसरो होलीपुरा ग्राम।

बटेश्वर

इसका प्राचीन नाम सूरसेन नगरी अथवा सूरीपुर है। जरासंध की सेना नष्ट भ्रष्ट होने पर वह निर्जन हो गया था। जमुना तट पर बट वृक्ष के समीप एक शिवालय होने के कारण साधारण जन उसको बटेश्वरनाथ कहने लगे थे। कालांतर में जब वहाँ बस्ती हो गई तो उसका नाम बटेश्वर विख्यात हो गया बटेश्वर जमुना के उत्तर तट पर बसा हुआ है। भदावर महाराज बदन सिंह ने बादशाह से भूल से यह कह दिया कि बटेश्वर जमुना के दक्षिण तट पर बसा हुआ है। अपनी भूल को सुधारने हेतु महाराजा ने नौ कोस लंबी नहर खुदवाकर जमुना की धार को पश्चिम की ओर घूमाकर उत्तर में

नौरंगी घाट पर मिला दिया और उसकी पुरानी धार को एक पक्का बांध बनाकर रोक दिया। यह बांध विश्रांत के नाम से विख्यात है और पुरानी धारवाले स्थान को बदनवाहा कहते हैं। विश्रांत पर बने शिवालयों में महाराजा बदन सिंह के द्वारा बनाए हुए बिजुरिया मठ के बीजक में संवत 1665 विक्रमी अंकित है।

बदनवाहे में प्रति वर्ष एक वृहद पशु मेला लगता है जिसमें देश देशांतरों से व्यापारी ऊँट, घोड़ा और बैल बछरे लाकर क्रय विक्रय करते हैं। उत्तर भारत का यह सबसे बड़ा पशु मेला है और इससे आगरा जिला परिषद को 4-5 लाख की आय होती है। जमुना की विश्रांत जीर्ण शीर्ण हो चुकी है और इस साल की बाढ़ में उसमें कई स्थानों पर दरार पड़ गई है। यदि इसकी शीघ्र मरम्मत न हुई तो आशंका है कि जमुना अपनी पुरानी धार से बहने लगेगी और मेला के लिए स्थान नहीं रहेगा।

पिनाहट

चंबल के किनारे बसा हुआ एक पुराना कस्बा है और कुछ काल तक भदावर नरेश का निवास स्थान रहा है। कस्बा के दक्षिण में रनवास और बाबन खंभा दरवार हाल अब भी बना हुआ है। भदावर महाराज का बनवाया हुआ चांदनी चौक और अन्य इमारतें पिनाहट के प्राचीन वैभव का आभास प्रदान करती है। अनाज और घी की यह मुख्य मंडी थी परन्तु पोरसा मंडी के खुल जाने के कारण पिनाहट का व्यापारा शिथिल हो गया है। अब कस्बा पिनाहट में एक हाईस्कूल, थाना, विकास खंड का कार्यालय है। पोस्ट आफिस में टेलीफोन की व्यवस्था है तथा कस्बे में बिजली की रोशनी है।

कचौरा

आगरा और इटावा जिलों की सीमा पर यह ग्राम जमना तट पर बसा हुआ है। प्राचीन काल में यह प्रांत का बड़ा व्यापारिक केन्द्र था। जैनी और माहेश्वरी वैश्य नावों द्वारा दूर-दूर तक व्यापार करते थे। जैन मंदिरों में ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दियों के बीजक पाए जाते हैं।

पारना नौगवाँ

महाराज भदावर के निवास स्थान से पश्चिम और जमुना तट पर बसा हुआ एक बहुत बड़ा गाँव है। इसके प्राचीन जमींदार दीवान साहब कहलाते हैं और भदावर राजवंश के हैं। राजकुमार को मारना गाँव जागीर में प्राप्त हुआ। यह जागीर अविभाजित समझी जाती थी और उसका उत्तराधिकारी ज्येष्ठ पुत्र होता था। अंग्रेजी शासन काल में भदावर नरेश को राजा और पारना के जागीरदार को दीवान साहिब की वंशानुगामी पदवी प्रदान की गई।

मई
(धर्मगोपाल चतुर्वेदी, पुरा कन्हैरा)

भदावर के चतुर्वेदियों के 18 गाँवों में मई भी सम्मिलित है। मई बटेश्वर से लगभग 2 मील

है शिकोहाबाद जानेवाले मार्ग पर यमुना में बेहड़ में बसी हुई है। लगभग 300 वर्ष पूर्व जो चतुर्वेदी यहाँ आए वह बिजकौली से यहाँ प्रवासित हुए थे। इन महानुभाव को ज्योतिष विद्या का अच्छा ज्ञान था। कहा जाता है कि महाराज भदावर पर महाराज सिंधिया ने आक्रमण किया था, उस समय आप महाराज भदावर के दरबारी ज्योतिषी थे। इस लड़ाई में महाराज भदावर की विजय हुई। महाराज ने इस विजय के उल्लास में इन चतुर्वेदी ज्योतिषी जी को 40 बीघा जमीन इस उपलक्ष्य में प्रदान की थी। कहा जाता है कि पहले इस स्थान पर मिश्र ब्राह्मणों का अधिकार था। इन चतुर्वेदी का प्रवास उनको अखरा और उनसे व इन चतुर्वेदी जी के वंशजों से सदैव तनी रहती थी। परन्तु इन लोगों ने मिश्र लोगों को नाको चने चबवा दिए थे। इनके पराक्रम को वह न झेल सके और अपनी किला सदृश्य हवेली त्याग कर इस स्थान को छोड़ने को विवश हो गए। इनकी समृद्ध हवेली के भग्नावशेष अब भी ऊँचाई पर पड़े हैं। इन चतुर्वेदीजी के वंशज श्री लाल भाल जी थे। आपने बिजकौली ग्राम के सामने सड़क पर अपनी समाधि बनवाई थी जहाँ पर एक आम का वृक्ष था। यह स्थान अब तक लालभाल के नाम से प्रसिद्ध है।

बिजकौली
(प्रकाशचंद्र चतुर्वेदी, कानपुर)

ग्राम के पूर्व में लगभग एक फलांग पर नीचे की ओर यमुनाजी होलीपुरा की ओर से आकर बटेश्वर की ओर बहती है। यमुना किनारे से तीर तीर जाने में बटेश्वर केवल एक मील पड़ता है। सड़क से दो मील का अंतर है। बाह ग्राम से सात मील पर है। ग्राम तक पक्की सड़कहै। बिजकौली में यमुना किनारे से बटेश्वर का दृश्य बहुत रमणीक प्रतीत होता है।

इस ग्राम में दीक्षित, निनौलिया, वैसान्धर गोत्रीय कुटुम्ब निवास करते हैं। इनके अतिरिक्त अहीर, हरिजन इत्यादि अन्य जातियों के भी कुछ परिवार है। इस ग्राम में चतुर्वेदी समाज के व्यक्तियों की संख्या कम ही है क्योंकि जीविकोपार्जन के लिए अधिकांश व्यक्ति विभिन्न स्थानों पर जाकर नगरों में बस गए हैं।

पिनाहट
(श्री सुरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी)

स्वनामधन्य होली सिंह जो भी इसी नगरी में पैदा हुए। वह नित्य प्रति यमुना स्नान के लिए जहाँ आज होलीपुरा बसा हुआ है जाया करते थे। बाद में उसी स्थान पर अपने नाम से होलीपुरा बसाया। पिनाहट में भी उनके नाम का एक कुआँ बना हुआ है जो आज भी उनकी याद दिलाता है। होली बाबा की अमूल्य राय भदावर राजाओं को शिरोधार्य थी। गदर के पश्चात अंग्रेजी राज्य में यहाँ तहसील थी। बड़े-बड़े वकील भी यहीं पैदा हुए तथा अपने नाम को कायम रखने के लिए उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति एक मंदिर में जनहित के लिए लगा दी।

किसी समय में चतुर्वेदियों के पिनाहट में बत्तीस घर थे। प्राय: सभी परिवार सम्पन्न थे। आज केवल आठ घर शेष रह गए हैं। गाँव में वही परिवार रह गए हैं जिनके पास निज की खेती थी।

पिनाहट में क्षेत्रीय विकास खंड तथा उसके कर्मचारियों के रहने के लिए सुंदर मकान भी सरकार की ओर से निर्मित किए गए हैं। एक सुंदर चिकित्सालय भी खुल गया है। जनता की सुरक्षा के लिए पुलिस थाना पी. ए. सी. की एक कंपनी हर समय रहती है। एक छोटा सा वायरलेस स्टेशन

भी है। डाक तार तथा टेलीफोन की भी व्यवस्था हो गई है। आज जीवन की बहुत सी सुविधाएँ प्राप्त हो गई हैं जो पहले नहीं थी।

पिनाहट की खोआ की गुझिया प्रारंभ से ही प्रसिद्ध है तथा आज भी जैसी गुझिया यहाँ बनती है वैसी कहीं भी नहीं मिलती। एक बार जो उसका रसास्वादन कर लेता है वह जीवन पर्यंत नहीं भूल सकता।

महाराज भदावर की ओर से फागुन के महीने में बैलों का यहाँ मेला लगता है।

तरसोखर
(श्री कालिका प्रसाद चतुर्वेदी, तरसोखर)

तरसोखर गाँव चंबल की सुरम्य घाटियों में भदौरिया गाँवों के मध्य में बसा हुआ है। यह जिला भिंड से साढ़े सत्रह मील दूरी पर है और भदावर राज्य के कीर्ति स्तंभ के रूप में अपनी शान बढ़ाए हुए खड़े अटेर के किले से ढाई मील दूर है। चंबल नदी करीब साढ़े तीन मील गाँव से दूर है और वर्षा ऋतु में चंबल नदी गाँव की उपजाऊ कछार में आकर भर जाती है और प्रकृति की देन के रूप में उपजाऊ मिट्टी छोड़ जाती है।

तरसोखर गाँव की स्थापना के बारे में इतना ही कहा जा सकता है कि यह गाँव छः सौ वर्ष पुराना है। जिसका प्रमाण यही है कि गाँव में एक प्राचीन कुआँ बना हुआ है जिस पर एक शिलालेख है जो बतलाता है कि 1417 में श्री भूदेव मिश्र द्वारा इसका निर्माण किया गया था। भदावर राज्य की स्थापना से पहले यहाँ मेवाती मुसलमान रहते थे जिनके वंशज आज भी अटेर में रह रहे हैं।

तरसोखर में चतुर्वेदियों के बसने की एक ऐतिहासिक घटना है। यह लोग मूल रूप से मथुरा के चतुर्वेदियों की ही संतान है। मुगलों के शासन में हिन्दुओं पर अनेक अत्याचार किए गए थे और इन्हीं के फलस्वरूप एक घटना घटी थी जिसकी वजह से हमारे पूर्वजों को मथुरा को त्याग कर यहाँ आकर बसना पड़ा। कहा जाता है कि किसी बात को लेकर कुछ चतुर्वेदियों का उस समय के मुसलमान काजी से झगड़ा हो गया था और उस झगड़े में हमारे पूर्वजों ने काजी व उसके परिवार को मार डाला था। इसके पश्चात मुगल शासन के दण्ड से बचने के लिए उन्होंने मथुरा से पलायन किया। मथुरा त्यागने वाले चार भाई थे जिनमें से दो भाई फरौली गाँव (जिला एटा) में बस गए और आज भी उनकी संतानें वहाँ फल फूल रही है। दो भाई यहाँ से अलग होकर भदावर राज्य में आए और भदौरिया राजा का संरक्षण पाकर तरसोखर में बसे।

तरसोखर में बसनेवाले इन दो भाइयों के नाम श्री दुर्गा प्रसादजी व श्री गणेश प्रसाद जी थे और इनके पिता का नाम श्री विक्रमाजीत पांडे था। दुर्गा प्रसाद जी बड़े भाई थे और गणेश प्रसाद जी छोटे। इन दो भाइयों का वंश इतना बढ़ा कि आज के करीब पच्चीस वर्ष पूर्व तारसोखर में चतुर्वेदियों के 45 घर थे।

बाह

वाह भदावर प्रांत का सबसे बड़ा कस्बा है। पिछले दशकों में इसका काफी विस्तार और उन्नति हुई है। आगरा से यह 42 मील की दूरी पर आगरा कचौरा मार्ग पर स्थित है। यहाँ पर तहसील

के अतिरिक्त क्षेत्रीय विकास केन्द्र, भदावर डिग्री कॉलेज, बालिकाओं के लिए जूनियर हाईस्कूल, चिकित्सालय व शिशु प्रसव केन्द्र है। यहाँ पर पाइप द्वारा पानी और बिजली की व्यवस्था है। यहाँ से मोटर, बसें आगरा व इटावा आदि स्थानों को जाती हैं।

यहाँ पर सर्वप्रथम चतुर्वेदी पुरोहितों का एक परिवार जिसके सदस्य दिलसुख राय जी थे लगभग 150 वर्ष पूर्व इटावा से आए थे। उस समय उन्होंने यहाँ पर कपास बाहर भेजने का कारोबार शुरू किया। उसी परिवार के हजारी लाल जी चतुर्वेदी ने यहाँ पर एक धर्मशाला का निर्माण करवाया। इस धर्मशाला की देखभाल इस समय उन्हीं के वंशज रामस्वरूप जी करते हैं। इसी धर्मशाला में सन 1939 में चतुर्वेदियों का वृहत सम्मेलन और 1945 में महासभा का अधिवेशन हुआ था। अब इस परिवार के अतिरिक्त कुछ अन्य चतुर्वेदी बांधवों ने अपने मकान बनवा लिए हैं और स्थायी रूप से रहने लगे हैं जिसमें एक परिवार कछपुरा से बुचई घरबारियों का आकर बसा है।

कछपुरा
(श्री देवी प्रसाद चतुर्वेदी, कानपुर)

कछपुरा गाँव भदावर के अठारह चौबों के गाँवों में से एक है। यह आगरे से पूर्व की ओर 48 मील की दूरी पर तथा इटावा से पश्चिम की ओर 24 मील की दूरी पर बसा हुआ है। जमुना नदी से इसका फासला लगभग डेढ़ मील है। लेकिन गाँव इतने ऊँचे पर बसा है कि जमुना नदी का पानी बाढ़ के समय कछपुरा गाँव तक नहीं पहुँचता। गाँव के प्रधान निवासी चौबे ही थे जिनमें घरबारी, जौनमाने, चकेरी और बुचई पांडे (घरबारी) के चार परिवार मुख्य थे। इनमें घरबारी परिवार के पूर्वज बिहारीलाल जी थे जिनके नाम पर यह परिवार जाति में प्रसिद्ध है।

यहाँ का दूसरा परिवार ज्योनमानों का है। इस परिवार के एक बुजुर्ग मथुरा प्रसाद जी मुरादाबाद में लखनऊ के शाह जी के यहाँ जमींदारी के काम में कार्य करते थे और श्री रामगंगा के भक्त थे।

हमारे मथुरान्त
कमतरी का इतिहास, हरिशंकर चतुर्वेदी

बौद्ध काल इस गाँव के विषय में किवदन्ती प्रसिद्ध है कि किसी कम्बुनाम के मेवाती ने इसे बसाया था। इस गाँव के बसाने के समय का ठीक पता तो चलता नहीं लेकिन यह अनुमान से 2500 वर्ष पुराना बसा हुआ मालूम होता है। 450 वर्ष पूर्व यह ग्राम पूर्ण समृद्धशाली था और पूर्व पश्चिम लम्बा-लम्बा बसा था। ग्राम से पश्चिम लगभग तीन फलाँग की दूरी पर कछपुरा नाम का एक गाँव है जिसमें अब अधिकतर चौबे लोग ही रहते हैं और हर साल मि. चैत्र कृष्णा 9 को एक मेला लगता है। इस मेले का सम्बन्ध भी प्राचीन इतिहास से मालूम देता है क्योंकि उस समय में जहाँ जलाहे और कोरियों के मकान अधिक थे। कपास की खेती भी खूब होती थी जिससे यह लोग कपड़े बनाकर रहते थे और मेले से बाहर के व्यापारी उन्हें खरीद ले जाते थे। अब जुलाहे तथा कोरियों के मकान नष्ट हो जाने से मेला नाम मात्र को रह गया है। उस समय में कमतरी से कछपुरा तक बराबर मकान थे जिनमें कोरी, जुलाहे, मेवाती और बौद्ध भिक्षुक रहते थे जिनके मकानों के चिन्ह, ईंटें तथा कुँआ आदि अभी

मिलते हैं।

ग्राम के पश्चिम ग्राम से मिला हुआ एक टीला है जिस पर अभी बौद्धों की मूर्तियाँ पाई जाती है और आशा की जाती है कि यदि यह टीला खोदा जावे तो बौद्धों के बनाये हुए कुछ अन्य चिन्ह भी मिलेंगे। सारनाथ बनारस में एक लेख निकला है कि ''कचौरा और बटेश्वर के बीच'' कमतरी नामक गाँव में हमारे (बौद्धो के) मंदिर है और उनमें हमारे भिक्षुक रहते हैं। यह लेख ग्राम के प्राचीन होने की कल्पना को और भी पुष्ट करता है। बौद्धों के समय में यहाँ वालों का प्रधान व्यवसाय कपड़ा बुनना और खेती करना था। शेष काल-बौद्ध धर्म का प्रचार जोरों से होते हुए भी यहाँ और प्राचीन धर्म के मनाननेवालों की संख्या इस गाँव में कम न हुई थी। इसी के फलस्वरूप शैव धर्म की उन्नति हुई। मूर्तियों की स्थापना होने लगी। शिवजी की एक मूर्ति की स्थापना गाँव के उत्तर पश्चिम के कोने में एक जंगली वृक्ष के नीचे ऊँचे टीले पर हुई जो बन खंडेश्वर महादेव के नाम से विख्यात है जिनके दर्शन करके हृदय से गद्‌गद् हो जाता है।

महाराज भदावर शिवजी के उपासक थे और उनकी उत्कृष्ट इच्छा थी कि कहीं पर शिवजी के बहुत से मंदिर बनवाये। इस काम के लिए उन्होंने कमतरी के घाट को ही उपयुक्त समझा था क्योंकि उन दिनों रेल तो थी ही नहीं। एक स्थान से दूसरे स्थान को देशाटन करने वाली यात्री तथा माल असवाब सब नावों पर ही आया करता था। यह घाट नावें ठहरने का एक अड्डा था क्योंकि इसके पास इधर-उधर के गाँवों से बाहर जाने के लिए नील, रूई, कपड़ा आदि बहुत आगे बढ़ते थे। अत: व्यापारी यहाँ दो चार दिन ठहरकर अपनी नावों को भरकर तब आगे बढ़ते थे। महाराज भदावर ने विचार किया कि इन लोगों को ठहरने का बड़ा कष्ट हैं अत: हाँ कुछ मंदिर और ठहरने को मकान बनवा देना चाहिए। यह विचार कर दो मंदिर बनवाये गये तथा मकानात बनवाने के लिए बहुत सा पत्थर मंगवाया जो अब तक रेती से ढका पड़ा है। जब जमुनाजी में बाढ़ आकर बालू बह जाती है तो यहाँ भांति-भांति के नक्काशी किये हुए खंभों तथा दरवाजे दृष्टिगोचर होने लगते हैं। मिती चैत्र शुक्र दौज को प्रति वर्ष एक मेला लगवाना शुरू किया गया था। किन्तु श्रीमान् महाराज साहब का देहावसान हो जाने से यह मकाननत बनवाने का काम पड़ा ही रह गया था। तब से परोपकारी, दानवीर तथा शैव उपासक महाराज की स्मृति स्वरूप यह मेला अब तक लगता चला आता है। ग्राम के पूर्वी किनारे की ओर ग्राम्य देवता की स्थापना की गई जो ''गाँव की माता'' के नाम से प्रसिद्ध है।

भदावर इतर मथुरांत का इतिहास

1. खान देश नसीरा बाद- भुसावल के निकट माडली स्टेशन से दो मील दूर नसीराबाद ग्राम में दस घर जौन माने, पांडे तथा तिवारी माथुरों के थे। यहाँ विवाह बदले से होता था। इनके पूर्वज व्यापार करते-करते फिरोजाबाद से आकर कई पीढ़ियों से उक्त ग्राम में बसे हैं। बालापुर (बरार) में चौबे इनके संबंधी हैं। जौनमाने हिन्डौन से आये हैं। मिश्र आगरा से तथा नसवार मथुरा से मेवाड़ होकर आये हैं। फिरोजाबाद से तिवारी सबसे पहले आये हैं। वंश को बचाने के लिए मैनपुर आदि के चौबे को कन्या देकर यहाँ बसाया। यहाँ के लोग रूई, गल्ला व कपड़ा का व्यापार करते हैं। इनके संबंध जयपुर कोटा से होता है।

2. उणिमारा- यहाँ सन 1898 में चौबे मुन्नालाल जी नसवार गोत्रीय रहते थे। इनके छोटे भाई जंगलात में थे। मोतीलालजी चौबे, जौनमाने दंगीलाल जी, हरबक्श जी, नाथूलाल जी मिश्र, भगवतीलाल मिश्र, गोकुलानंद जी मिश्र, बालकृष्ण जी मिश्र, छोटेलाल जी, राधाबल्लभ जी, गंगा लाल जी, जमुनालाल जी, विरधीलाल जी, फत्ते लाल जी,

लक्ष्मीनारायण, प्रताप जी, खूब जी थे।

3. टोंक– राज्य रामपुरा में मथुरालाल जी. प्रभुलाला जी, जोरावरलाल जी माफी थे।

4. बूंदी– राज्य में गिरधारी लाल जी वैद्य थे।

5. सभीदी– में मुन्नालाल जी मौरूसी जायदाददार थे।

6. टुगारी– में छींगालाल जी व्यापार करते थे।

7. टोडा राय सिंह का– जयपुर में मिश्र राममुख जी, हर मुख जी, गोवर्धन जी जागीरदार थे। इनके दो ग्राम थे। मथुरा लाल जी, चुन्नीलाल जी, जानकी लाल जी फारसी जायदाददार थे।

8. दुर्गाजयपुर– देवीलाल जी कवीश्वर थे।

सन 1898 ई. में राजपूताना की राजपुत्र हितकारिणी सभा ने सूचित किया कि चौबीस रजवाड़ों के 2778 विवाहों में 2707 विवाह नियम अनुकूल हुए जिसमें विवाहों में खर्च कम करने के नियम का पालन किया गया। 72 विवाह नियम विरुद्ध हुआ।

9. मैनपुरी– पांडवों के समय इसका नाम मैनपुर था। चौहानों के आने के पहिले यहाँ केवल बाह्मा रहते थे। यहाँ मैनदेव की मूर्ति भी स्थापित है जिसके कारण इसका नाम शायद मैनपुरी पड़ा है। इसके निकट पाद्म में जनरल कनिंधम को बहुत से सिक्के व बौद्धमत की मूर्तियाँ मिली। सन 1914 ई. में जब गोरी ने जयचंद्र पर चढ़ाई की तो यमुना के किनारे चंद्रवार पर युद्ध हुआ। मैनपुरी में मुसलमानों का अधिकार हो गया। इसी समय चौहान मैनपुरी आये और सन 1420–48 में राजा प्रताप चंद्र ने यहाँ एक किला बनाया जिसके नीचे वर्तमान नगर बस गया। अवध के स्वतंत्र होते ही मैनपुरी अवध के अधीन हो गई। फर्रुखाबाद के नवाब से राजा का युद्ध होने पर जसमई दरवाजा पर चौबे वीरता से लड़े व राजा को वीरता दिलवाई। भदावर व मैनपुरी का बेटी विवाह संबंध है और चौबे दोनों के कृपापात्र रहे। करीब 500 वर्ष पूर्व मैनपुरी महाराज के कोई संतान न थी। स्वामी हरिदास मिश्र के आशीर्वाद से हुई। महाराज ने इनका विवाह सहारा में करा दिया। इनके वंशजों के 500 घर हुए। यहाँ चतुर्वेदियों के पाँच मुहल्ले हैं। मैनपुरी में पहले मिश्रों के छः सौ बासठ, पांडों के 88, क्षत्रियों के छियालीस, घरवारियों के चौवालीस, सवतों के बयालीस, पूर्तवालों के उन्तीस, पाठकों के छब्बीस, ककोरियों के बीस, जौनमानों के उन्नीस, तिवारियों के पन्द्रह, छिरोरों के चौदह, अमुगियों के छः लोग थे। अब यहाँ पर चतुर्वेदियों के सौ घर रह गये हैं। यहाँ के राजा चौहान वंश के हैं जिनका आविर्भाव सनातन धर्म के रक्षार्थ अर्बुद गिरि पर आबू में एक अग्नि कुण्ड से हुआ था। इसी अग्नि कुण्ड से प्रभर (पवार), सोलंकी और परिवारों का जन्म हुआ था।

चौहान राजा पृथ्वीराज चौहान के चाचा कान्ह के वंशज माने जाते हैं। मैनपुरी गढ़ का निर्माण वीर सिंह जू देव ने 1488 में कराया। नींव में मैना देवी काम देव की मूर्ति निकाली इसी से इसका नाम मैनपुरी पड़ा। मैनपुरी को संमत सिंह जू देव तथा उनके साहसी पुत्र मोहकम सिंह ने 1746 ई. में बसाया। यहाँ पहिला ग्राम मोहकम गंज था। संमत सिंह के भाई दिलीप सिंह ने फर्रुखाबाद के हजारी नवाब को हराया जिनके यहाँ पाँच मोहल्ले में मईवाल, चौथियाना, मिश्रान, इमली टोला व सौतियाना में बसे। बाद में मावनी टोला, रावत टोला, गंज, तिवारी मुहल्ला में चतुर्वेदी बसे।

हरिदास मिश्र की प्रथम तीन संतानों से इमली टोला, मिश्राना व चौथियाना बसे और चौथे पुत्र दानपुर गये। इसी परिवार के जगजीवन दास चंद्रपुर बसे। मैनपुरी के प्रख्यात समाजसेवियों में सर लक्ष्मीपति मिश्र, कर्नल रतन कुमार मिश्र, सालिग राम पाठक, राय बहादुर

चम्पाराम मिश्र, राय बहादुर खडगजीत मिश्र तथा उमराव सिंह पांडे के नाम उल्लेखनीय है।

10. इटावा- शंकर पुर से सर्वप्रथम गोविन्द दास पांडे जी यहाँ आकर बसे। इटावा में इसलिए कि वहाँ के छिरोरा यहाँ ब्याहे थे। गोविन्द दास जी प्रथम चौबे थे जिन्होंने रामानुज सम्प्रदाय की दीक्षा ली और उस मत के ज्ञान को अप्रति वैभव वरांश में लिपिबद्ध किया। जयपुर के महाराज मान सिंह पांडे के पूर्व पुरुष कल्याणकार जी को मथुरा से ले गये। द्वारिका प्रसाद जी शर्मा के सौजन्य से ककोर यहाँ से सबसे प्राचीन निवासी है। लुंज पुंज चौबे बहुत धनी एवं विख्यात थे। एक बार नगर भर में इन्होंने थान दुशाले बाँटे। भवन अब भी विद्यमान है। छिरौरा लोगों के पूर्वज रूहेलों के जमाने में मथुरा छोड़कर शाहबाद, चंदौसी चले आये। पुन: बरही में आ बसे। वहाँ ग्वालियर के सरदारों से मुठभेड़ हुई। फिर इटावा आये। पांडे मथुरा से महाराज मान सिंह द्वारा ले जाये गये। शंकरपुर सबसे पहिले गोविन्द दास जी आये क्योंकि आप छिरोरा में ब्याहे थे। पुरोहित मथुरा से करौली, वहाँ से ग्वालियर फिर भिंड तथा वहाँ से इटावा आये। डूंडवारों में सर्वप्रथम उग्रसेन जी राणा सांगा के साथ सन 1527 में चित्तौड़ से इस ओर आये। कुंआवालों में जानकी प्रसाद जी उर्फ बापी साहब एक बड़े वीर पुरुष थे। घुघरा वालों के सहारे बहुत से चौबे कमतरी आदि से यहाँ पहुँचे। बंगला वालों का नाम भी प्रसिद्ध है। ग्वालियर, धौलपुर की पलटनों में नौकर थे। बाबूजी ने आगरे के किले में फाटक की कीलों पर छाती रौंद दी और हाथी की टक्करों से फाटक तुड़वा दिया।

11. फरौली- 12वीं शताब्दी के अंत में मथुरा के काजी ने लेटे-लेटे तीस चालीस नववधुओं का गाना सुना और प्रात: उन्हें अपने दरबार में बुलाया। कर्मचारी कमलाकर व विक्रमजीत चौं के घर पहुँचे। यह भाई बारात के प्रबंध में लगे थे। कमलाकर विवाह समाप्ति पर काजी के यहाँ पहुँचे और काजी ने तीन दिन भीतर औरतों को दरबार में हाजिर होने का हुक्म दिया अन्यथा कुल माल जब्त करने की आज्ञा दी। तीन दिन पश्चात कमलाकर ने काजी को खड्ग से मार दिया। आगे-आगे कमलाकर और उनके भाई स्त्रियों सहित भागते थे और पीछे सेना थी। राणा के युद्ध में भाई के चार लड़के युद्ध में मारे गये। वह एटा के समीप भागकर पहुँचे। सोते समय सर्प फन फैलाकर उनकी रक्षा कर रहा था। गाँव का नाम फरौली पड़ा। इनकी संतान औरंगजेब के समय 500 की मनसूबेदारी हुई।

13. भरतपुर- यहाँ पर राज्य की नींव पड़ने से पूर्व चतुर्वेदियों का मेल-मिलाप जाटों से था। जिन्हें चतुर्वेदी विद्यापार्जन कराते तथा समस्त घर कार्य विवाह आदि कराते। ये लोग मिसरजू कहलाते थे। बैर नामक स्थान में चतुर्वेदियों ने गृह बनवाये। बदन सिंह जी ने डींग में राजधानी बनाई। महाराज बलवंत सिंह को चतुर्वेदियों ने समय-समय पर बड़ी सहायता दी। चतुर्वेदी भदावर, हिन्डौन तथा करौली इत्यादि स्थानों से आकर बस गये।

14. ग्वालियर राज्य में चतुर्वेदियों के गाँव- ग्वालियर के परगना सवलगढ़ एवं विजयपुर में ही चतुर्वेदियों के अधिकांश गांव थे।

15. बसुआ गोविन्दपुर- यह जयपुर तथा अलवर के अंतर्गत है यहाँ के समस्त निवासी कुलपति के वंशज कहे जाते हैं जिनको इसके निकट के 12 ग्राम जागीर में मिले थे।

16. कामा- भरतपुर राज्य में है तथा बरसाने की सीमा पर है। बालकृष्ण जी बूंदी के नायब दीवान थे। उनको पुत्रों को गिरिधर शर्मा जी के पूर्वज जयपुर लिवा ले गये। पुत्र को कामा के गोस्वामी महाराज अपने साथ ले गये। इनके वंशज गोपाल कृष्ण जी घरबारी थे। जो भरतपुर रहते थे इस प्रकार कविवर बिहारीलाल जी के वंशजगण भी भरतपुर रहते थे। मुसददी प्रसाद जी वर्मा की कविरत्न माला में बिहारी तथा अन्य कितने ही चतुर्वेदी कवियों के नाम

तथा उनकी कविता का उल्लेख है। लोकनाथजी तथा उनकी पत्नी भी कवि थीं।

17. तरसोखर- जिला भिंड में तथा चंबल से चार मिल दूर है। यहाँ पहिले लोग कृषि करते थे। महाराज भदावर से माफी मिली थी फिर इसके ग्वालिय राज्य में आने से भूमि पर कर लगने लगा। तब यह लोग व्यापार के हेतु बाहर निकले। पहिले उनके संबंध मैनपुरी व भदावर में होते थे। तीन चार व्यक्ति शाह जी के यहाँ कार्यरत थे। कलकत्ता में शेयर और रूई की दलाली व नौकरी करते थे।

18. अनूप शहर- गुर्जर वंश के महाराज नीलकरण ने दानपुर बसाया। इनसे वंशीधर अनूप सिंह ने अनूप शहर को संवत 1526 में बसाया। यहाँ बादामी पाक व मिठाइयों के दहीबड़े बहुत प्रसिद्ध है।

19. अन्य स्थानों में सागर, सबतगढ़, सकरौंदा, पारगढ़, बानसोरी, काडौना, रामपुर, सीरौन, मीतरा, जादेल, करेला शिवपुरी आदि है।

20. करहल- मैनपुरी व इटावा के बीचों बीच है। यहाँ की आबादी 10000 हैं। यहँ मुसलमानों द्वारा मथुरा आक्रमण पर चौबे आये थे। अब सबके मकान, बाग, बगीचें हैं। पहिले सराफे का कार्य चौबों के हाथ में था। यहाँ पहिले पचास घर थे। अब ग्यारह हैं।

21. सिकन्दरपुर- कायमगंज से पाँच मील दूर है। सकेसा के एक ब्राह्मण राय मल्ल के वंशजों ने बसाया था। यह 400 वर्ष पुराना गाँव है। मुसलमानीकाल में चतुर्वेदी मथुरा से गोविन्दपुर से फिर पटियाला व पटियाला से यहाँ पहुँचे। यहाँ लान मिश्र के वंशज, जौनमाने, तिवारी, पांडे अननियाँ हैं। यहाँ चतुर्वेदी परोपकारिणी सभा कार्य कर रही है।

22. फरौली- माथुर कूलभूषण वीरपुर कमलापति ने मथुरा के काजी को मार गिराया था। जब आप वहाँ से भागे, वर्तमान स्टेशन सहावर से दो मील दूर, फरौली ग्राम में थक कर सो गये। वहाँ एक सर्प ने धूप से बचाने हेतु आप पर छत्तर तान दिया। उसी मैदान में आपने फरौली की नींव डाली। सोरो का प्रसिद्ध तीर्थ इसी के पास है। फरौली के चारों ओर मुसलमान एवं ठाकुरों की बस्तियाँ है। जेठमलजी का नाम प्रसिद्ध है जिन्होंने बन्नूपुरा में एक बड़ी जमींदारी की स्थापना की थी। श्री भोलानाथ, लालमणि तथा राम गोपाल ने काफी धन कमाया। हाथरस, मथुरा तथा आगरा में यहाँ के लोग व्यवसाय में लगे रहे। 1931 में पचास घर थे। वे अब ग्यारह रह गये थे।

23. कायमगंज- कायमगंज के चौबों के पूर्वज मथुरा से निकलकर मैनपुरी पहुँचे। वहाँ से करहल तदुपरान्त कायमगंज। यहाँ सेवाराम पर तदुपरान्त गिरधारीलाल हुए। उनके पश्चात कन्हैयालाल, राम रतन, परमानन्दजी, देवी दयाल जी व एक पुत्री जानकी हुई।

नहटौली

(धर्मगोपाल चतुर्वेदी, पुरा कन्हैरा)

भदावर में 18 ग्रामों में प्रवासित चतुर्वेदियों के गाँवों में जिला आगरे की तहसील बाह में श्री यमुना जी के कूल में लगभग तीन मील की दूरी पर बेहड़ के मध्य में चंद्रपुर, कछपुरा, कमतरी इत्यादि के समीप नहटौली ग्राम बसा हुआ है इस ग्राम में बसनेवाले आदि पुरुष भारद्वाज गोत्र के श्री बिहारीलाल जी चतुर्वेदी थे।

रीछापुरा

(मदनलाल चतुर्वेदी, चंद्रपुर)

यह गाँव चंद्रपुर से दक्षिण की ओर दो मील की दूरी पर उर्वर और समतल भूमि खण्ड पर स्थित है। चंद्रपुर से तरसोखर जानेवाले पंथियों को यह गाँव राह में पड़ता है। पहले इस ग्राम में माथुर ब्राह्मण बसते थे। कहा तो यूँ जाता है कि उन्नति के युग में माथुरों की लगभग सभी अल्लें यहाँ रहती थीं, पूरा मथुरान्त था। परन्तु अब ठाकुरों को छोड़कर इस ग्राम में एक भी माथुर का घर नहीं रहा।

रीछापुरा के माथुरों के अन्तिम कुल को चंद्रपुर आये 60 या 70 वर्ष से अधिक नहीं हुए, पर इतने ही काल में रीछापुरा में बहुत परिवर्तन हो गया है। परन्तु वहाँ के ठाकुर पुरानी प्रीति का परिचय देने के लिए होली की दूज को चंद्रपुर चौपाई अवश्य लाते हैं।

नौगवाँ

यद्यपि इस गाँव की गणना भदावर के उन 18 गाँवों में की जाती है जिनमें किसी समय चतुर्वेदी निवास करते थे किन्तु आजकल वहाँ पर उनका एक भी घर शेष नहीं रह गया है। यह गाँव भदावर राज्य की अन्तिम राजधानी होने के कारण महत्वपूर्ण गिना जाता था और संभवत: इसीलिए जो माथुर चतुर्वेदी भदावर राज्य की सेवा में कार्य करते थे वहाँ जाकर बस गए थे और उन्होंने अपने कुछ संबंधियों को भी वहीं बसने के लिए बुला लिया था। यह तो सर्वविदित ही है कि भदावर राज्य में चतुर्वेदियों ने बड़ा सम्मान प्राप्त किया था। नौगाँव जमुना के किनारे बसा हुआ है जो आगरा बाह कचौरा मार्ग से कुछ दूरी पर स्थित है। यह गाँव जैतपुर कलां से लगभग 13 किलोमीटर की दूरी पर है।

पारना

भदावर राज्य की राजधानी नौगवाँ के निकट यमुना नदी के तट पर पारना ग्राम बसा हुआ है। यह गाँव काफी बड़ा है किन्तु वहाँ पर प्रारंभ से ही चतुर्वेदियों के कुछ ही परिवार वास करते थे जिनमें एक मुख्य परिवार पांडों का था जो वहाँ तरसोखर से जाकर बसा था। इस परिवार के श्री मेवाराम जी व उनकेतीन छोटे भाई श्री साँवल दास जी व चुन्नीलाल जी झाँसी में और श्री अनन्तराम जी लखनऊ में जाकर बाद में बस गये। इसके अतिरिक्त एक अन्य मिश्रों का परिवार चौम्हों से जो तरसोखर के समीप है पारना में पहले जाकर बसा और बाद में वहाँ से तालगाँव जाकर रहने लगा। इस समय इस गाँव में एक भी चतुर्वेदी स्थायी रूप से नहीं रहता।

श्री कैमर देवता
(श्री हरि प्रसाद जी मिश्र, इन्दौर)

चंद्रपुर तहसील बाह जिला आगरा में श्री कैमर देव का थान रमणीय उच्च स्थान में बना है। वहाँ पर कई प्रतिमाएँ विराजमान हैं। उनके ऊपर एक प्राचीन नीम का वृक्ष सघन छाया का हरा भरा शोभायमान है। स्थान बहुत प्राचीन है, जागती ज्योति है। कैमर का स्थान अन्यत्र बहुत कम पाया जाता है। ये देवी के लंगुरा है। कई बार लोगों को परिचय दिया है। इनके भक्त रामबकस चौबे ककोर (मुन्नू) चंद्रपुर में थे। हमने उनके दर्शन बहुत वर्षों तक किए हैं। दूसरे भक्त श्री किशनदास चौबे पुरोहित थे, इनके वंशज चंद्रपुर में हैं। इन दोनों के सिर पर कैमर आते थे और बड़े परिचय के भविष्य उदाहरण देते थे। एक समय की बात है कि हमारे घर पर गदर के हंगाम में डाका आनेवाला था। चार दिन पहले मुन्नू चौबे के सिर पर कैमर महाराज आये और कहा कि चंद्रपुर में लीलाधर जमुनादास मिश्र के घर पर आज के चौथे दिन रात को 9 बजे डाका पड़ेगा। उराउरि के अहीर पीतम वगैरह डाका डालेंगे। उराउरि चंद्रपुर से तीन कोस उत्तर को जमुना पार मैनपुरी के जिले में शिकोहाबाद परगने में है। उमरैया भाट चंद्रपुर का जो उराउरि में रहता है उसने सब भेद दिया है। उनके घर के सावधान हो जावें। लोगों को कैमर के परिचय का पूर्ण निश्चय था, संभल गये। सब बाल-बच्चे पहले से दूसरे मकानों में चले गये। सामान ले जाने लायक था सो ले गये, तो भी भारी हंडे वगैरह वासन व कपड़े आदि घर में रह गये। चौथे कहे समय पर डाका आया। डाकुओं को सामान मिला सो ले गये। अहीर पकड़े गये और सख्त सजाएँ हुईं। दूसरा परिचय हमारे दादे के छोटे भाई लीलाधर इन्दौर में बहुत बीमार हुए थे, चिट्ठी बहुत दिनों तक नहीं आई थी। बड़ी फिकर थी। मुन्नू महाराज के सिर पर कैमर आये और कहा कि लीलाधर इन्दौर में बीमार है सोच मत करो 31 लंघन हुए हैं। आज पथ्य दी गई है 6 दिन में चिट्ठी आ जावेगी। वैसा ही हुआ। इनका मैला चैत बदी अष्टमी को होता है। दूर-दूर के लोग तथा कुछ चौपई आती है। रात को जमींदार की ओर से आरती गाना बजाना होता है। तात्पर्य ये मनवांछित फल देते है। इनकी कविता-

बड़ा वीर बलवीर विराजै बड़ा वीर एक बंका है।
बीच में थान बँधौ कैमर का जहाँ लगै नहिं शंका है।।
जी भाखै सोई जिय सो होवे करै दुष्ट को पडंका है।
चंदरपुर नगर सुबस बसै जहँ कैमर जू को डंका है।।

कचौरा (घाट का गाँव)

कचौरा गाँव जसवंतनगर, उत्तर रेलवे स्टेशन से पाँच मील दूर पर बसा है। पक्की सड़क है। कचौरा के सुंदर मंदिर तथा घाट आज भी देखे जा सकते हैं। राजा भदावर का पुराना दुर्ग अवश्य आज खंडहर अवस्था में है।